IJFANS INTERNATIONAL JOURNAL OF FOOD AND NUTRITIONAL SCIENCES
ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 03, 2022

भारत के महान व्यक्तित्व डॉ. शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता

सुमित कुमारी, शोधार्थी, षिक्षा विभाग, टांटिया विष्वविद्यालय, श्रीगंगानगर
डॉ प्रीती ग्रोवर, सह आचार्य, षिक्षा विभाग, टांटिया विष्वविद्यालय, श्रीगंगानगर

परिचय

आधुनिक युग में नैतिक, धार्मिक तथा आध्यात्मिक मूल्यों में ह्रास हो रहा है।मानव जाति अपने विनाश और दुर्दशा के कगार पर है। इसलिए प्रत्येक राष्ट्र की उन्नति उसकी शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर करती है। जिस राष्ट्र में जैसी शिक्षा व्यवस्था होगी, वैसे ही वह राष्ट्र व वहाँ के नागरिक बनेंगे। वैसे इस सम्बन्ध मे भारतवर्ष एक सौभाग्यशाली राष्ट्र है, क्योंकि भारतीय ऋषियों, संतों और समाजसुधारकों ने समय–समय पर अपने देश की शिक्षा के लिए बहुत कुछ किया है। डॉ0शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी भी उन अनेक रत्नों में से थे। इन्होंने भारतीय शिक्षा को धार्मिक, आध्यात्मिक, सामाजिक व सांस्कृतिक पक्षों से जोड़ा। भारत में दार्शनिक मनन–चिंतन का अनेक प्रणालियों में बंट जाने पर भी एक ही तारतम्यता दृष्टिगोचर होती है। इसलिए डॉ0 शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी एक शाश्वत ज्ञान प्रहरी व उच्च कोटि के दार्शनिक विचारक के रूप में स्मरणीय हैं। इसलिए इनकी शैक्षिक विचारधारा का अध्ययन आवश्यक हो जाता है।वर्तमान शिक्षा प्रणाली के परिप्रेक्ष्य में तो इनके शैक्षिक विचारों का शोधन आवश्यक हो जाता है। इन दोनों महानुभावों के विचार एक पारदर्शी जीवन जीने की कला है।इस प्रकार डॉ0 शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी जैसे महानविचारक और विद्वानों के सम्बन्ध में शैक्षिक अध्ययन उन व्यक्तियों के लिए मूल्यवान,महत्वपूर्ण एवं उपादेय होंगे जिन्हें वर्तमान अथवा भविष्य में अपने देश अथवा विश्व की शिक्षा–व्यवस्था के निर्माण का दायित्व ग्रहण करना है।

समस्या कथन

भारत के महान व्यक्तित्व डॉ. शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का अध्ययन तथा वर्तमान शिक्षा में प्रासंगिकता ।

अध्ययन के उदेद्श्य

प्रस्तुत शोध कार्य के उद्देश्य निम्नलिखित हैं–

1. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों का समीक्षात्मक अध्ययन करना।
2. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी द्वारा लिखित पुस्तकों एवं उनके द्वारा दिये गये व्याख्यानों, भाषणों के आधार पर आज के वातावरण व शिक्षा व्यवस्था को सुदृढ़, उन्नत एवं जीवनोपयोगी बनाने हेतु सुझाव देना।
3. आधुनिक भारतीय परिप्रेक्ष्य में डॉ0 शंकर दयाल शर्मा एंव महात्मा गांधी के शैक्षिक विचारों की उपादेयता का मूल्यांकन करना।

शोध प्रविधि –

प्रस्तुत अध्ययन मूल रूप से डॉ0 शंकर दयाल शर्मा तथा महात्मा गांधी द्वारा लिखित ग्रन्थों के आधार पर उनके शिक्षा दर्शन को सुव्यवस्थित करने और उनके दर्शन के आधार पर शिक्षा के स्वरूप, उद्देश्य, मूल्य और शिक्षा पद्धतियाँ आदि की मीमांसा प्रस्तुत करने हेतु नियोजित किया गया। । उपर्युक्त उद्देश्यों की प्राप्ति हेतु ऐतिहासिक अनुसंधान विधि का चयन किया गया है।ऐतिहासिक अनुसंधान का सबसे बड़ा गुण वर्तमान पर प्रकाश डालने की क्षमता है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को प्रकाशित करने के लिए प्रस्तुत शोध में ऐतिहासिक विधि को अपनाया जाएगा। इसके अन्तर्गत डॉ0 शंकर दयाल शर्मा तथा महात्मा गांधी के शिक्षा सम्बन्धी विचारधारा का वैज्ञानिक अध्ययन किया गया।

निष्कर्ष –

डॉ शंकरदयाल शर्मा जी के अनुसार शिक्षा विधार्थियों में नैतिक, चारित्रिक, गुणों, सत्य, त्याग,प्रेम, अहिंसा, क्षमा, करूणा और राष्ट्रीय सेवा जैसे महान गुणों का संचार करे तथा नई प्रोधोगिकी, रचनात्मक प्रभावों को ग्रहण करे तथा गांधी जी ने 3 एच की शिक्षा पर बल दिया शिक्षा मनुष्य मे शरीर, मन और आत्मा के उच्चतम विकास पर बल दे।

इस प्रकार दोनो शिक्षाविद नई शिक्षा निति के कौशल आधारित शिक्षा को पूर्ण रूप से महत्व देते है साथ ही जो परिस्थितियॉ वर्तमान मे भयावह हो रही है उनके सुधार के लिए दोनो शिक्षाविदों द्धारा सुझायी गयी नैतिक, चारित्रिक गुणों से परिपूर्ण शिक्षा ही सुधार ला सकती है अतः इन दार्शनिको द्वारा सुझाया गया शिक्षा का समप्रत्यय वर्तमान में पूर्णतः प्रासंगिक है।

शिक्षा के उद्देश्य के विषय मे डॉ शंकरदयाल शर्मा ने चिंतन, विकास, आध्यात्मिक विकास पर भौतिक विकास से अधिक बल दिया तथा भौतिक तथा अभौतिक विकास मे संतुलन स्थापित करना जिससे व्यक्तित्व विकास हो सके यही शिक्षा मुख्य उद्देश्य बताया। जबकि गांधी जी ने स्वालम्बन विकास, व्यवसायिक विकास तथा जीविकापार्जन शिक्षा का मुख्य उद्देश्य बताया।

वर्तमान मे भौतिक तथा व्यवसायिक विकास का उद्देश्य शिक्षा का मुख्य उद्देश्य अधिक प्रासंगिक लगता है लेकिन मानवता के उत्तम विकास व उत्तरोत्तर उपलब्धि के लिए डॉ. शंकर दयाल शर्मा द्वारा सुझाया गया भौतिक तथा अभौतिक विकास में संतुलन पर हमें अधिक बल देना होगा।

इसी प्रकार पाठ्यक्रम में डॉ. शंकर दयाल शर्मा जी स्थानीयता तथा वैज्ञानिक चेतना से भरपूर सरल व व्यवहारिक पाठ्यक्रम पर बल देते है। तथा महात्मागांधी जी ने क्रियाप्रधान, हस्तकौशल तथा मातृभाषा युक्त पाठ्यक्रम को अपनाने को कहा।

वर्तमान शिक्षा निति भी हस्तकौशल आधारित पाठ्यक्रम, मातृभाषा में शिक्षण तथा क्रिया प्रधान पाठ्यक्रम अपनाने का पूर्ण प्रयास कर रही है और ऐसा इसलिए किया जा रहा हैं क्योंकि यह विचार आज भी उतने ही प्रासंगिक है जितने पूर्व में थे।

इनके साथ साथ अनुशासन , शिक्षक विद्यार्थी समबन्धों तथा शिक्षण संस्थाओं की महत्ता से सम्बन्धित इन महान विचारकों के विचार आज हम नहीं अपना रहे जिसके कारण हमारी शिक्षा प्रणाली दिनोंदिन बद्त्तर स्थिति में पहुँच रही है। वर्तमान में शिक्षक शिक्षण को केवल पैसा कमाने का साधन मानते है शिक्षण संस्थायें दुकानो का रूप लेती जा रही हैं। जो पहले

ISSN PRINT 2319 1775 Online 2320 7876
Research Paper © 2012 IJFANS. All Rights Reserved Journal Volume 11, Iss 03, 2022

शिक्षा का मन्दिर होती थी तथा शिष्य साम, दाम, दण्ड, भेद से ड्रिगी प्राप्त करना अपना उद्देश्य समझ रहे हैं। जिससे हमारा विकास मात्रात्मक रूप में तो हो रहा है लेकिन गुणोत्तर रूप में नही हो रहा है।

यदि हम अपनी शिक्षण व्यवस्था को फिर से जगत गुरू के रूप में देखना चाहते है तो डॉ. शंकर दयाल शर्मा तथा महात्मा गांधी द्वारा दिये गये अनुशासन, गुरूशिष्य सम्बन्ध व विधालय से सम्बन्धित सम्प्रत्यय को हमें अपनाना होगा।

शैक्षिक फलितार्थ –

इस शोध से शिक्षा प्राप्त कर विद्यार्थी, शिक्षक व विद्यालय इसका उपयोग इस प्रकार करेगें –

- विद्यार्थियों के लिये – विद्यार्थी स्वाबलम्बी बनने की भावना उत्पन करके श्रम के महत्व को जानेगे। विद्यार्थी नैतिकता व सामाजिकता के गुणों को बढ़ायेगें। विद्यार्थियों को प्रावधिक व तकनीकी शिक्षा प्राप्त करना चाहिये तथा आध्यात्मिक शिक्षा पर भी बल देना चाहिये। विद्यार्थियों को वेतनभोगी प्रवृति त्याग कर सृजनात्मक व चिंतन अभिवृति को अपनाकर अपने आत्मबल, चरित्र तथा आत्मविश्वास पर बल देना चाहिये।
- शिक्षकों के लिये – शिक्षा प्रणाली को प्रभावशाली बनाने में शिक्षक उच्चतम शिक्षण बिन्दुओं को शिक्षण में अपनायेगें तथा साथ ही बालक की जिज्ञासा उत्पन्न करने के लिये मनोवैज्ञानिक सिद्धान्तों का प्रयोग करेंगें। बालक की क्षमता को जानकर उनके अनुरूप वातावरण बनायेगें । शिक्षक परिणात्मक वृद्धि के प्रलोभन का त्याग कर गुणात्मक परिणाम प्रदान करने का प्रयत्न करेंगे।
- विद्यालयों के लिये – विद्यालयों में विभिन्न प्रकार की सहशैक्षिणिक गतिविधियों के द्वारा विद्यार्थियों में नैतिकता, सामाजिकता, जिज्ञासु प्रवृति, सृजनात्मकता व चिंतन शक्ति को विकसित करने के प्रयास किये जा सकेंगें।

भावी शोधकर्त्ताओं हेतु निम्न सुझाव एवं शीर्षक प्रस्तावित हो सकते हैं–

- 1. डॉ0 शंकर दयाल शर्मा के मानवतावादी शिक्षा दर्शन का अध्ययन।
- 2. डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन, डॉ0 जाकिर हुसैन, डॉ0 शंकर दयाल शर्मा केशैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- 3. भारत गणराज्य के महान शिक्षाविद् एवं पूर्व राष्ट्रपति डॉ0 ए0पी0जे0 अब्दुलकलाम एवं डॉ0 शंकर दयाल शर्मा के शैक्षिक विचारों का तुलनात्मक अध्ययन।
- 4. भारत गणराज्य के प्रथम राष्ट्रपति डॉ0 राजेन्द्र प्रसाद एवंशंकर दयाल शर्मा के शैक्षिक विचारों का समालोचनात्मक अध्ययन।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. अरविन्द.(1948), ''ऐ सिस्टम ऑफ नैशनल एजुकेशन'', आर्य पब्लिकेशन हाऊस कलकत्ता ।
2 बुच एम.बी. (1974), ''ए सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', एम.एम. यूनिवर्सिटी बड़ौदा ।
3 बुच एम.बी. (1978), ''सेकण्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', सोसायटी फॉर एजुकेशन रिसर्च एंड डेवलपमैंट बड़ौदा, ।
4 बुच एम.बी. (1987), ''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'' बड़ौदा ।
5 बुच एम.बी. (1991), ''थर्ड सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजुकेशन'', खण्ड प्रथम व द्वितीय, एन.सी.ई.आर.टी. दिल्ली ।
6 शर्मा, शंकर दयाल : चेतना के स्रोत, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, 1995
7. शर्मा, शंकर दयाल : हमारे चिंतन की मूलधारा, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली,1995